Today's Poem – 18.07.2014

बाप समान अपकारी पर भी उपकार करना

निंदक को भी अपना मित्र बनाना

बाप समान पक्की करनी है दृष्टि

समझनी है भाई समान रहने की युक्ति

बुद्धि को याद की यात्रा से सोने का बर्तन बनाना

याद की रेस करना

बाप की डायरेक्शन पर चलना

पढ़ाई पर ध्यान देकर, अपने पर कृपा करना

अपने को राजतिलक देना

निंदक को मित्र समझ उनकी भी सद्गति करना

सब कुछ बाप की हवाले कर न्यारे प्यारे रहना

रूहानियत से रोब को समाप्त करना

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!